

ॐ नमः श्री आर्यनाथाय ॥ श्रीमत्यागजकण्ठयज्ञानाध्यायविना
 डिगे ॥ नानाद्वयप्रगाकी ॥ नानायां किमिदं डिगे ॥ नानाविधप्र
 मंकायै नानासंगसमाकुत्र ॥ नानाकृतसंगसंगतिरिहसंगकादधिवि
 सिगे ॥ नानाद्वयरूपायैरायत्यक्षीरनिखलशाकिन्नत्रमधु
 वाक्षीरं मयवाप्रमसंकलशासिद्धिविद्याधनगणेशश्चैव्यनि

II-309

धमरेत्तं वज्राचार्य सुरत श्री महाबिहार

नादिरोशासनिरिवीवत्रागोचः सकसंसनिमविगतावाधिसत्त्वम
रक्षेत्रान्येदक्षरुसिस्वत्रेवयो॥ आर्यमात्रादिनिदवाविद्यात्राज
सदस्यज॥ काधेनाजगारुधन्यो॥ रुखयीवादिनिवृत्ता॥ सत्त्व
सत्त्वदिगोचः का रगवात्रवलाकिरु॥ विजुदात्ररुख॥ धीमानय
नगह्रासनस्थि॥ सदमागयसायूका मेयाचकृपयाचिरु॥ ध

मोदिदक्षानिगस्यामदगायवयवदि॥ मयायविहृमागम्यवज्ज
हिमदावल॥ यलमकृपयायूक॥ ययूकसावलकिरु॥ निस्क
गसिंदाग्निगज व्याधुचसंकट॥ सादत्यमिमनसत्वा॥ मयासंसात्रसा
गत्र॥ वदो॥ संसात्रिक॥ या॥ मत्रागद्वयगमासय॥ मय्यकृपयनसत्वा
रुसकृदिमदामनायवमकृजगत्राध॥ सधीमानवलाकिरु॥ उ

वाचसधु नावाधीवरुयाधिःय वाधिनींभृधुगुश्चक ग्राङ्ङुज
मिगारुय गायिनः॥यधिधनवः॥मय ना मगाः॥लाकमगा
प्रमदाक न धयाय गा जगद्वनः॥मदगाः॥इदिगादि खसकाः
आयुः॥धुद्वलनय का कामयकि ॐ मा का प्राद द वास प्रमान धान
कचयकि यथा लाकाः॥मयकि य रु ना रुसाना नी लाखलक न

दवीमारुमारुप्रिगिद्वनः॥जगत् न ज लाथाय ज दमत्यादिगङ्
ने॥का का प्रधु मंयाकः॥ना नारय समाकूलः॥मन धाद वनामाः
निसत्वा प्रक्षाम्य दं सदा॥गा प्रयि श्याम्य दं सत्वा ना नारय मदा
वाना गेन गा प्रगिमां लाक गाय कि म नियं गवाः॥कृताः॥लिय गो
रुत्वा मयः॥सा श्रमाद लसागाः॥कल नि कृ क प्रिद्वल ॐ दं वन

यद्विगा॥ नामासुहासकं वदित्यत्रा कीर्तिग ऊने ॥ दक्षर मि
श्वने नारथे वाधिसत्त्वो मेरुधिरक ॥ सच्चयायद प्रपुष्ट्यमाकृत्या की
रिचद्वनां धनधन कनकं च वज्रा वाग्यं पृष्टि वद्वन ॥ आस्य ना वाग्य
ऊननं सच्च सत्त्व सत्त्व वदं ॥ वज्री धीरुय कं च व सच्च सत्त्व विवद्वन
मेरीमालं वासत्त्वानां मकीरु यमदासन ॥ धवंग के रगवा चरु स

त्रवलाकिग ॥ यवलायदिहा ॥ सच्चो मेवायु लक्षया दक्ष ॥ दक्षि
धकलमदस्य पृष्ट्य लक्षममिनां गमवा चमदाया ॥ १४ साधुसा
धमदागया ॥ नामानमृ नमदा रागा सच्च सत्त्व क वत्तल ॥ यानिसंक
र्यमनडा ॥ १४ यमनडा ॥ १४ सस्यक ॥ १४ दक्ष ॥ १४ सच्चयाधिवि
निमका ॥ १४ सच्चयाधिविगा ॥ अकालमृ र्क निद्व ॥ १४ माया

मिसखावर्गो गान्धर्वाद्यं वदन्ति यद्विद्वत्संख्या ४४१॥ धर्मोऽनन्तमात्रं
कवेनैवाकविष्यध्वंशनिवृत्ताक्षां लावनसलावनगात्रताला
रुवसवसत्त्वानृकपिनिमवसत्त्वोक्तानिनिमद्वययुक्तसद्व
समयेतत्तन्मात्रावरात्रवलाकय १२मसि वसत्त्वानाकृष्ट
रुष्टत्वादा ॥ ३॥ सात्रेयुगात्रेयु वत्त्वादा ॥ ३॥ सिद्धसिद्धशुद्ध

विष्णुद्वसगतासज्ज मयौद्धयनिमालब्धामह्यमत्रयिमदा
याद्वयवत्रयत्रयुचिन ॥ ३ ॥ अयत्राजिगामदात्राये ३ ॥ विष्णु
मदावला ॥ ३ ॥ ४ ॥ मय ॥ ३ ॥ कल्याणधीमदागंजालाक
धायीमदाय ॥ ४ ॥ मय ॥ ३ ॥ मय ॥ ३ ॥ मय ॥ ३ ॥ मय ॥ ३ ॥
वृत्तिदायुष्टिदायादा ॥ ३ ॥ कात्राकामत्रयिधीमवेतत्तदि न्वयुक्त

संयं भास्वो यधीऊया यस्माया नमिमादवी। आर्यमात्रामनाप्रसा
॥ द्रुंदि किं ४०० विमीय शुविद्या नालीयीर्यं वदा ॥ वदना ननामदा
रामे वी। अडिगायीन वाससा ॥ मदागाया मदासुता मदावलपय ५
कमा ॥ मदाप्रोदामदा वधीदुष्ट सत्त्वनिर्दं वी प्रधम काष्ठाक
नया ॥ विडया कलन नोये ॥ विष्ट सा लीधडी खडी वकी वा

यीद्यमाय धा ॥ ऊरुनिसुफनी का वी काल वायी निष्ठा वदी ॥
वकुधीमाद निष्ठा का। का का वी दा विडी हुता ॥ वकुधी वद
मा गा वरु दा नगुष्ट वासिनी ॥ मा ऊ ल्या धा हु वी सो म्या ॥ जा न वद
मना ऊ वा। काया नि निमदा वगा स र्या य वाहि ता ॥ स र्थ वा
रु यु या वृष्टि न सुम न्य द धनी ॥ व वदा सा स नी धा मी मी प्रया

मृतविक्रमा ॥ शब्ददीयातिनिमिद्धावर्गुली अमृतायुक्ता ॥
 न्यायनामदाहागासुतमाधियदहना ॥ कृताकृपासिनीती ॥
 सादृश्यादययत्रायमाङ्गदकदितायुक्ता ॥ शब्दव्याकृतिव ॥ ३
 सन्ता ॥ वागीध्वरीसिवाशुक्लनित्यामवेयमानगमासवोथ
 साधानीरुडागाफीध्वनीधनंददा ॥ अमृतागागमीयुष्मा

धामलोकाध्वनासुडा ॥ नावानामगुनामना सुधासायनीयवही ॥
 डंतात्रकृपावलंबनकृषवधीयत्वादा ॥ नासाधकवर्गकंश
 मत्कीर्तिगदिगवा ॥ नयप्रसन्नसुतगीरुद्धंदवानामायदस्ररुगा
 सोरागधरागकप्रधं सवेकित्विबनाधनं सच्चयाधियधमनं स
 वेसस्वसखावर्द ॥ वि० कालयं० परधं दीमान् शुचिमानसमादि

न
 न १॥ १॥ इति वरुणव काले न वाच्य धियं स वा प्रया न ॥ ४॥ इति न
 स्यात् सखी निर्यं द नि डा धन वान रु वे न । यथा रु व ते स दा य शुभ मः
 धा वि व न सं धाय ॥ व ध ना स व मे व ध व वे दा न य या रु व स य वे
 मि य ना या मि धृ गी न आयि ड कि न पा र गा मे स क ट दृ र जे ना ना रु
 य स म कि न स प्र ना द्य व ना मा नि स व रु या न यो द कि ॥ १॥ का ल

मृ त्वा रु वी त्वा रु व कि या प्र या वि न नं धय ॥ १॥ मान थ स रु लं ऊ त्वा
 न स्ये क स्य स दा त न ॥ १॥ य धि द या न न था य मा न व ॥ ४॥ की रु यि थ कि
 ॥ स दी य का ल मा य मा न धि या य न रु गे न न ॥ १॥ द वा ना ग रु थ य
 रु ॥ १॥ ग ये व ॥ ४॥ क ट य रु नो ॥ १॥ यी धा वा रा द्य सी रु ता मा रु वी वी ड
 न ऊ ता ॥ १॥ अ कि न्नी स्ता न का ॥ ४॥ य मा रु द्दी न्ना दा स दा य दा । ग था

प्या २

२५

क्यायसात्रका ४। स्थवकृत्वा काखाद कादय ४ वेना जश्चित्रका ४
युद्धोयवा न्येद्वय वगसा ४। क्यामयिनलध कि किंयुनक ह्यावेय
दाद्वय सत्ता नवाध न काध या ताक मकिव। द वास प्रीयसंयास
मनह वीमिमरुद्विका ४। ताग म्भयसु मेयूक ४ यग यो गे श्रवडन
।। डाकिम नार वीचिमानु कु लित्र ४। यद हो नयि किमानु मरावा

मीसत्र ४। सुविष्ठात्रद ४। कल्यास निपसं सवी ताधि विरुद्विरु
विष्ठी।। सदा विरदिता वृद्धय यय यो यय यन वृ मि।।

॥ आयेनात्रा क द्रविकाया ४। नासा ४। कत्र ४। न कं वृद्धरा
विमंससाय ४।। २६६०३३० ॥

603-II

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

२